1. तिपू, तिपति und तिपते Duatup. 28, 5; नियाति (nur im Buatt., z. B. 6,113. 17,43 nachzuweisen) 26,14; चित्तेप, चित्तिपे; तेटस्यति, ेते; श्रतिप्सीत्, श्रतिप्तः, तिप्तः, तिप्तः, Ueber die Abwesenheit des Bindevocals s. Kar. 4 bei Siddh. K. zu P. 7,2, 10. 1) schleudern, schnellen, werfen: गैरिंग न तेतिरिविजे ज्याया: R.V. 10,51,6. श्रृष्ट्वं तिपति भूम्यामधि A.V. 9,1,10.20. तिपत्येकेन वेगेन पञ्चवाणशतानि यः MBn. 3,1018. सायकां-स्तीदणान्तिपते 4,1096. R.1,56,6.11.14. 3,35,82. पादाङ्ग छेन चित्तेप (म्रिस्यि) संपूर्ण दशयाजनम् 1,1,63. 3,26,17. M. 11,263. यस्मिन्तेटस्यसि (शक्तिम) MBa. 1,2781. स पत्काष्ठं तृषां वापि शिलां वा तेटस्पते मिप 3,16310. R. 1,56,13. 3,32,6. (म्रस्त्रम्) चितेप — मारीचारिस 1,32,16. मुहन्च इति त दारि तिपेदण्स्वद्य इत्यपि M. 3,88.260. R. 1,32,17. (प्रूलान्) चित्तिपु: प-रमञ्जूडा रामाय 3,31,38. 8,5. 6,36,11.14. Ragn. 12,95. MBH. in Benf. Chr. 39, 8. तस्याक्ं निशितं भक्तं चितिषे ebend. 29, 27. 35, 6. Buatt. 15, 65. मानुषमेतं में निप wirf mir zu Kathas. 5,84. चिनेप दर्भ किल खाँ प्र-ति R. 5,68,11. जालम् — कैवर्तः न्निपति परितस्त्वा प्रति मुद्धः Çîxtiç.3, 16. म्रात्मानं तस्योपरि ज्ञित्वा Pankar. 57, 16. चर्णी ज्ञिपली (beim schnellen Lauf) Makkin. 9, 19. भृताद्य पीनानभितः निपत्ति (partic.) R. 5, 11,11. वायुतिप्त इव — घनः 3,58,21. म्रमी सुन्द्रा रृष्टिपाताः किं तिप्यते Вилятя. 1,93. मां प्रति — चतुः तिपति 94. धूर्तप्रलापानभितः तिपति (рагtic.) R. 5,11,11. pass. mit act. Form: वास्केर्य नागस्य सक्सा तिप्यतः स्री: MBH. 1, 1126. — 2) Etwas wohin (loc.) thun, giessen, streuen, stecken: भाजने — पयः जिप्त्वा — पवास्तया उद्गेर्दर्भ 1,230. तानकृम् — जिपाम्यज-स्रमञ्जानास्रीष्ठेव यानिष् Baac. 16, 19. तिप्ता दएडाधिया ऽट्याय। मञ्जूषा-या स चेटीभि: Катиль. 4,62.74. दीप्ताग्नी पाणिमत्तः त्विपास Мвкки. 147,8. येनास्य वारिधी पूर्व किन्नाः तिप्तस्य (in's Meer herabgelassen) रङ्गवः Vid. 317. बन्धने Pahkar. 210, 17. पार्थस्य निक्तस्याङ्गे सा ऽत्तिपत्त् रिकां ततः Riéa-Tar. 5, 437. स्रजमपि शिरस्यन्धः निप्तां धुनोत्यव्हिशङ्क्या Çir. 183. वैकातकं तु तत् । यत्तियंकिनतम्रासि AK. 2,6,3,38. — 3) von sich stossen, abwerfen; Jmd loslassen: किं कुर्मस्य भर्ट्यया न वप्यि इयां न जि-पत्येष यत् Вильтя. 2,69. तेन निप्ता विधेर्वशात् Клтиля. 4,36. — 4) von sich weisen, verschmähen: प्रेतं। तिपत्तं क्रितापलाद्रे: Buig. P. 3,8,24. म्रनिलं निपत्तः 15, 17. — 5) auf Jmd schieben (eine Schuld): तदा भृत्ये दोषान्तिपात Hir. II, 133. — 6) Jmd mit dem Geschoss treffen: तिपदश-स्तिमपं दुर्मतिं र्ह्न RV. 10,182,2. — 7) (zu Boden schlagen) zu Grunde richten, vernichten: त्रिपत्यचं मरुद्पि वेण्गृत्मिमवानल: Bula. P. 6,1, 14. इन्द्रेण प्रेषिता (श्रप्तराः) तेतुं तपस्तस्य Вванма-Р. in LA. 53,5. med. sich gegenseitig zu Grunde richten: ताः निपेर्न् (नीयेर्न्?) प्रजाः सर्वाः तिप्रं द्रीपरि तादशे (लोके) MBH. 3,1094. — 8) mit Worten Jmd verletzen, schmähen, schelten: एकजातिर्दिजातींस्त् वाचा दारुणया त्रिपन् M. 8,270. चित्तेप च स तं धीमान्वाग्भिक्त्याभिः MBH. 14, 1606. BHig. P. 9,18,17. त्तिपत्तो दस्युधर्मणा 8,9,1. शीर्यात्सर्वाश्चित्तेप MBn. 1,4072. fg. 3,628. 1174. 8672. 10883. M. 3, 628. 8, 312. 313. Baig. P. 9, 18, 15. ਕ੍ਰਜ਼ਨ: (wegen) ਜ਼ਿ-त: P. 5,4,46, Sch. Mit प्रति statt des blossen acc.: काश्चित्पमान्तिपति मां प्रति ह्रतवाकी: (so ist zu lesen) Çantıç. 3,10. — caus. 1) werfen lassen: चन्दनाग्रुहिनर्यासान् u. s. w. ब्राव्हत्य त्रेपयित तवापरे R. 2,76,16. तामध्य-श्रचिपङ्कातः त्रेपयामास Katels. 13, 160. — 2) platzen machen: मास्य लर्च चितियो मा शरीरम् R.V. 10, 16, 1. — Vgl. auch caus. von 1. ति. — श्रीत stets act. P. 1,3,80. Vop. 22, 1. partic. श्रीतात्तिस (näml. संधि-

मुक्त) übergeschnellt, Bez. einer besonderen Form von Verrenkung Suça. 1,300.8.16.

— ऋषि 1) bewerfen Kaug. 44. ऋषितिप्त beschmissen: वृष्ठशकुनिना 46. — 2) aufsetzen, auflegen; partic. ऋषितिप्त = निन्ति स. an. 4, 97. = प्रिणिहित Med. t. 184. — 3) schmähen, beleidigen, verspotten: तस्मा-देतेर्धितिप्त: सन्देतासंद्यर: सद् [M. 4, 185. तं नाधितिप्तन्ति (neutr. pl. partic.) 5,11,11. 6,67,14.27. Hit. 81,20. 83,16. Çik. 66,5. Milay. 11,20. Buic. P. 3,18,13. Dagak. in Benf. Chr. 183,20. श्रीनिक्तम् — ऋषितिपत् (वन्त्रम्) verspottend so v. a. übertreffend Buic. P. 3,28,30. श्रीदित्र = प्रतितिप्त Ak. 3,1,42. H. 440. = भिर्तित स. an. = कुत्सित und भिर्तित Med. — 4) (einer Krankheit) begegnen: द्राष्ट्रमधित्तिपत् Sugr. 2,337,8. — Vgl. श्रीधत्त्रप्, श्रद्यधित्तेप.

— श्रप wegwerfen Kits. Ça. 16,3,3. fortnehmen, entfernen R. 3,1,24. Suça. 2,23,18.

— ऋभि stets act. P. 1,3,80. Vop. 22, 1. 1) mit raschem Schlage treffen, mit der Peitsche: र्योच कश्यार्था ऋभित्तिपन् RV. 5,83,3. — 2) übertreffen: ऋभितिपत्मैतिष्ट रावणं पर्वतिश्चिपन् Buatt. 8,5 1.

— म्रव 1) herab —, abschnellen, schleudern, hinunterwerfen, abwerfen: मर्व तिप द्विंग म्रश्मीनमुद्धा R.V. 2,30,5. मृजयदृहमा म्रव क् तिपड्डियाम् 4, 27,3. मृजयत्तिपक्तं उल्कामिव यो: 10,68,4. ततः क्षीा मक्ताचापं विकृष्या-भ्याधकं तथा। म्रवात्तिपत् MBu. 4,1917. शिर् उत्तिच्य नागस्य पुनः पुनः पुनः विवित्त्र्यात्तिपत् (beim Quirlen des Oceans) 1,1126. सूहमवस्त्रमवित्य्य गुनिवन्त्र्वाण्यवस्त क् R. 2,37,7. म्रवित्तप्त heruntergeworfen Suça. 1,118,1. nach unten geschnellt (näml. संधिमुक्त), eine bes. Form von Verrenkung 300, 8.15. — 2) heruntermachen, schmähen: म्रवात्तिपदामुद्वम् MBu. 2,1337. — 3) gewähren: क्रो क्रात्त्रपप्रसादानां मुक्दाम् — वृत्तिमर्कृत्यवनेतुं बद्रत्यः MBu. 13,3030. — cans. herabfallen machen: गृतं कृण्वते इक् नार्वं चित्तिपन् AV. 18,4,12.13. — Vgl. म्रवत्तेप fg.

— समय fortschleudern: जयाक् तामुत्तर्यस्त्रदेशे जयद्रयस्तं समयादिष-त्सा MB#. 3, 15662.

— श्रा 1) anwersen: पालम् — तरंगानितम् Pankat. 263, 20. — 2) niederwerfen, hinwerfen: भूमावात्तित्य कीचकम् MBu. 4, 460. 3, 442. 444. य-र्जुना धनुःश्रेष्ठं बाक्रभ्यामातिपद्रये ४,1426. (शिलायाम्) स्रातिप्य स्वेच्ह्-या भन्नयति (वंका जलचरान्) Pankar. 51,20. — 3) mit einem Geschosse treffen: वानराणां मुसंक्र्यः पार्धं केषांचिदातिपत् R. 6,78,5. — 4) anziehen, zusammenziehen, in Zuckung setzen Suga. 1,255,7. 254, 1. an sich ziehen, entreissen, fortreissen, fortziehen, wegnehmen, entziehen: स नेश्वेष परामृष्टा बलेन बलिना वरः। म्रातिष्य केशान्वेगेन बाद्धार्त्रग्राक् पाएट-वम् ॥ MBn. 4,750. वासा बलादातिपन् (der Wind) Вилктя. 1,50. Мвси. 69. श्रयपादमानिष्य Rage. 7,7. श्रानिपंस्तरसा गिरीन् Bulg. P. 6,12,28. मणा विकंगमानित VIKB. 143. म्रमतमानित्य जगाम MBB. 1, 1539. Çik. 126, v. l. मधूत्सवात्तिप्तपीरलोकं गृरुम् KATHAs. 4, 35. स ददाति मनुष्येभ्यः स एवातिपते पुनः MBu. 13,7528. कल्पाते चैव सर्वेषां स्मृतिमातिप्य ति-ष्ठति १४३. ततस्तेत्रश्च चत्रश्च सर्वप्राणभृतामपि । म्रानिप्य सरूसा सूर्या म्रो-तते स्वेन तेजसा R. 4,40,65. उत्सवाद्मिप्तचित्त Karuss. 4,110. मनः कर्म-भिरात्तिप्तम् Bulg. P. 2,1,18. रजस्तमाभ्याम् 20. द्वपीदार्यवर्णमव्हिमात्तिप्त-चंतम् 8,8,9. तयाः — तेत्रमा वः । म्रातिप्तं तेतः 3,16,35. — 5 hinausja-